मेरी चालू बीवी-108

“अभी कुछ देर पहले ही मेहता अंकल से चुदकर आई मेरी बीवी पूरे मूड में ही... अभी कुछ देर पहले ही नलिनी भाभी की चूत और गाण्ड से निकले मेरे लण्ड से खेल रही थी। ...”

Story By: imran hindi (imranhindi)
Posted: Tuesday, October 7th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: मेरी चालू बीवी-108

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मेरी चालू बीवी-108

सम्पादक – इमरान

क्या मजेदार चुदाई मैं आज कर रहा था, नलिनी भाभी का पति वहीं उसी कमरे के बाथरूम में था और यहाँ मैं उनकी सोती हुई बीवी को चोद रहा था।

यह सोचकर ही मेरा लण्ड और भी ज्यादा टाइट हो रहा था।

करीब 15 मिनट तक मैंने उनको जमकर चोदा, फिर अपना गीला लण्ड उनकी चूत से बाहर निकाल कर उनके चूतड़ को हाथ से फैलाकर उनकी गांड में डाल दिया।

और तभी मेरे लण्ड ने ढेर सारा पानी उनके गांड के छेद में भर दिया।

यही वो क्षण था जब कमरे का दरवाजा खुला… और…

मैंने तुरंत लण्ड भाभी की गांड से बाहर निकाल लिया और चादर को उनके नंगे चूतड़ों पर डाल दिया।

लेकिन अपना लण्ड को अंदर नहीं कर पाया… मेरे शॉर्ट्स नीचे पड़े थे।

ओह ! यह तो सलोनी है !

अंदर आते ही उसने सीधे मुझे ही देखा, कोई भी देखकर एक नजर में समझ जाता कि मैं क्या कर रहा था मगर सलोनी के चेहरे पर एक सेक्सी सी मुस्कुराहट ही थी।

सलोनी- क्या हुआ जानू ? मेरे बिना परेशान हो गए क्या ?

मैं- हाँ जानेमन… मैं भी और मेरा लण्ड भी !

सलोनी के मूड को देख मेरा मन भी हल्का हो गया, मैंने उस पर ध्यान दिया…

सिमटी हुई नाइटी और बगल में दबी हुई उसकी ब्रा…
वो बहुत ही सेक्सी लग रही थी।

मैं- अरे यह क्या हुआ ?
मैंने उसकी ब्रा की ओर इशारा किया।

सलोनी के चहरे पर कोई शिकन नहीं थी- अरे पता नहीं कैसे एकमम ही टूट गई, शायद रात सोते हुए इसकी तनी टूट गई होगी।

मैं- इसमें इस बेचारी का क्या दोष है ? तुम्हारे हो भी तो भारी रहे हैं। बेचारी इतनी छोटी… कैसे सहती इतना भार ?
मैंने सलोनी की दोनों चूची को अच्छी तरह मसलते हुए कहा।

सलोनी ने भी मेरे लण्ड को अपनी मुट्ठी में भर लिया- अरे मेरे लाल… तुम तो पहले गीले ही हो गए हो।
उसने मेरे लण्ड को पुचकारते हुए कहा- चलो तुमको थोड़ा सा प्यार कर देते हैं।

उसने मुझे बिस्तर पर चलने को कहा। हम दोनों ही बिल्कुल भूल गए कि बराबर में नलिनी भाभी सोने की एक्टिंग करती हुई लेटी हैं और बाथरूम में अरविन्द अंकल भी हैं।

मैं बिस्तर पर पीछे को लेट गया, सलोनी ने अपनी नाइटी भी उतार कर एक ओर डाल दी, वो पूरी नंगी बिस्तर पर आई।

मैं- जानू लाइट बंद कर दो !

वो फिर से नीचे उतरी, पूरी नंगी ही स्विच ऑफ करने गई।
स्विच नलिनी भाभी के बेड के ऊपर थे।

वो स्विच ऑफ कर भी नहीं पाई थी कि तभी बाथरूम का दरवाजा खुला और अरविन्द अंकल बाहर निकल आये।

सलोनी भी स्विच ऑफ करना भूल गई और पीछे को देखने लगी।

मैंने देखा कि अरविन्द अंकल आँखें फाड़े सलोनी को घूर रहे थे।

फिर जैसे ही उसको याद आया, उसने स्विच ऑफ किया और अपने बिस्तर पर आकर तुरंत मेरी चादर में आ गई।

मैंने भी चादर ओढ़ ली थी, पर इतनी देर में उन्होंने सलोनी के नंगे बदन के भरपूर दर्शन कर लिए थे।

हम दोनों ही शांत हो गए, कोई नहीं बोल रहा था, अंकल भी जाकर नलिनी भाभी की बगल में लेट गए।

तभी मुझे सलोनी का हाथ अपने लण्ड पर महसूस हुआ, उसको शायद ज्यादा फर्क नहीं पड़ा था।

मैंने भी मजा लेने की सोची और सलोनी की चूची को दबाने लगा।

मैंने आँख खोलकर देखा, अरविन्द अंकल हमारी ओर ही देख रहे थे।

उनसे बाथरूम का दरवाजा कुछ खुला रह गया था जिससे अंदर की लाइट से कुछ रोशनी हमारे कमरे में भी हो रही थी।

पता चल रहा था कि कौन कहाँ है.. और क्या कर रहा है।

मेरे दिमाग में भी एक रोमांच सा छा रहा था, मैंने भी सोचा जो हो रहा है, अच्छा ही हो रहा है, इसका भी मजा लिया जाये!

अभी कुछ देर पहले ही मेहता अंकल से चुदकर आई मेरी बीवी पूरे मूड में ही… अभी कुछ देर पहले ही नलिनी भाभी की चूत और गाण्ड से निकले मेरे लण्ड से खेल रही थी।
मेरे दिमाग में एक शैतानी सी आई… क्यों न आज इससे इसी लण्ड को चुसवाऊँ… देखूँ नलिनी भाभी की चूत की खुशबू यह पहचान पाती है या नहीं?

मैंने सलोनी को अपने लण्ड की ओर किया और वो तुरंत समझ गई…
सच इस मामले में सलोनी जैसा कोई नहीं हो सकता… ना तो वो किसी बात के लिए मना करती है और ना ही नखरे दिखाती है।
बल्कि मेरी हर बात बिना कहे समझ जाती है।
इसीलिए सलोनी मुझे बहुत पसंद है और मैं उसको बहुत प्यार करता हूँ।

सलोनी अपने ऊपर पड़ी चादर की परवाह ना करते हुए मेरे लण्ड की ओर चली गई और उसको अपने मुख में ले लिया।

मैंने अरविन्द अंकल की ओर देखा… वाह… उन्होंने नलिनी भाभी की चादर उनके ऊपर से हटा दी थी, उनके नंगे चूतड़ मुझे साफ़ दिख रहे थे, इसका मतलब सलोनी भी उनको साफ़ साफ़ दिख रही होगी।

तभी अरविन्द अंकल भी नलिनी भाभी के चूतड़ की ओर आये और वहाँ अपना मुँह लगा दिया।

पता नहीं वो केवल चूम ही रहे थे या फिर चाट भी रहे थे।

मेरे दिल में एक हल्का सा डर सा लगा कि कहीं उनको मेरे वीर्य की महक ना आ जाये।

मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ, जरा सी देर में ही मैंने देखा नलिनी भाभी सीधी हो अपनी दोनों टाँगें खोले अंकल को अपनी चूत चटवा रही थी और इधर सलोनी मेरे लण्ड को अपने गले तक अंदर ले रही थी, बहुत ही हॉट तरीके से चूस रही थी।

क्या मजेदार नज़ारा था।

नलिनी भाभी की चूत के पानी से सना लण्ड सलोनी के मुँह में था और मेरे वीर्य से भीगी चुदी हुई चूत को अंकल चाट रहे थे।

और फिर बिना एक दूसरे कि परवाह किये हुए ही मैंने सलोनी को वहीं घोड़ी बना कर पीछे से ही अपना लण्ड उसकी चुदी हुई चूत में घुसेड़ दिया, अभी कुछ देर पहले चुदी हुई चूत भी बहुत प्यारी दिख रही थी।

उधर अंकल भी नलिनी भाभी के ऊपर चिपके हुए थे, शायद उन्होंने भी अपना लण्ड उनकी चूत में प्रवेश करा दिया था।

बस अंतर केवल इतना था कि वो बहुत धीरे धीरे ही चोद रहे थे और हमारी चुदाई से बहुत तेज आवाजें आ रही थी।

मेरी जांघें तेजी से सलोनी के गद्देदार चूतड़ से टकरा रही थी जिनकी आवाज कमरे में गूंज रही थी।

सलोनी को देखकर मुझे लगा कि वो मेहता अंकल से चुदवा कर तो आई है मगर संतुष्ट नहीं हो पाई थी क्योंकि वो बहुत ही ज्यादा रोमांचित हो रही थी।
शायद मेहता अंकल जल्दी ही ढेर हो गए होंगे…

मैंने भी उसकी भावनाओं का पूरा सम्मान किया और उसको जमकर चोद रहा था।

करीब 15 मिनट तक मैंने उसको बहुत ही तेजी से तीन आसनों में चोदा।

हमको नहीं पता कि अरविन्द अंकल कब चोद कर सो भी गए थे, जब मैंने उधर देखा तो कोई हलचल नहीं थी।

हम दोनों को भी नींद आ रही थी, मैंने सलोनी को बाहों में लिया और दोनों नंगे ही एक दूसरे से चिपककर सो गए।

सुबह खटपट से पहले मेरी आँख खुली। सलोनी दूसरी ओर करवट लिए लेटी थी, हमारे ऊपर एक चादर थी, पता नहीं सलोनी ने ही ढकी थी या फिर अंकल ने ?

मैं उठकर बैठ गया- गुड मॉर्निंग अंकल…

अरविन्द अंकल- गुड मॉर्निंग बेटा…मैंने चाय मंगवा ली है… अच्छा हुआ कि तुम जाग गए।

हम दोनों के बीच रात को लेकर कोई बात नहीं हुई… शायद वो रात का नशा था जो अब उतर चुका था।

नलिनी भाभी शायद बाथरूम में थी, अरविन्द अंकल भी अपनी लुंगी पहने हुए थे पर मेरे जिस्म पर एक भी कपड़ा नहीं था।

मैंने देखा पास ही मेरा शॉर्ट्स रखा था, मैंने संभलकर उसको पहन लिया।

बिस्तर के ऊपर ही सलोनी की नाइटी और ब्रा रखी थी, ये कपड़े शायद नलिनी भाभी ने ही रखे होंगे।

तभी एक वेटर कमरे में आ गया, वो वहाँ रखी मेज पर चाय बनाने लगा, मैं भी उठकर थोड़ा सा इधर उधर टहलने लगा।

वेटर का चेहरा हमारे बिस्तर की ओर ही था, वो चाय बनाते हुए ही सलोनी को तिरछी नजर से देख रहा था।

चादर में सिमटा सलोनी का चिकना जिस्म भी बहुत सेक्सी लग रहा था।

मैं बस इतना सोच रहा था कि सलोनी एक जिस्म पर एक भी कपड़ा नहीं है और वो इसी कमरे में केवल एक चादर ओढ़े लेटी है जिसमें मेरे अलावा दो और आदमी भी हैं।
एक अरविन्द अंकल… चलो उनकी तो कोई बात नहीं… वो तो काफी कुछ देख और कर चुके हैं, मगर एक अनजान वेटर ? यह पता नहीं क्या क्या सोच रहा होगा ?

वेटर भी 25-28 साल का लम्बा और काला सा आदमी था पर बहुत ही साफ सुथरा और पढ़ा लिखा भी जान पड़ता था।

अरविन्द अंकल भी ना जाने क्या सोच रहे थे ? उन्होंने भी वेटर को घूरते हुए देख लिया, उन्होंने सलोनी की भलाई करनी चाही, सोचा जगा दूंगा तो वेटर उसको नहीं घूर पायेगा, पर ऐसा हो जायेगा यह उन्होंने भी नहीं सोचा होगा।
उन्होंने सलोनी को आवाज लगा दी- अरे सलोनी बेटा… तुम भी चाय ले लो… ठंडी हो जाएगी।

और तभी सलोनी ने एक ओर करवट ले ली…
‘ओह माय गॉड… यह क्या हो गया…’
कहानी जारी रहेगी।